अध्याय 16

जंगल में कोरह का बलवा

इस अध्याय में इस्राएलियों के बलवे की कहानी फिर से आरम्भ होती है। मरियम और हारून ने पहले मूसा की अगुवाई को अस्वीकार कर दिया था (अध्याय 12), और लोगों ने उन भेदियों के का पक्ष लिया था जिन्होंने प्रतिज्ञा किए गए देश को लेने के लिए परमेश्वर के निर्देशों का उल्लंघन किया था (अध्याय 13; 14)। अध्याय 16 और 17 में, गोत्रों के कुछ प्रधानों ने मूसा और हारून के विरुद्ध विनाशकारी परिणामों के साथ बलवा किया। लोगों को बलवा करने वालों का पक्ष लेने का दण्ड भी दिया गया था।

इस अध्याय के वृत्तान्त में दो विद्रोही समूह हैं - एक ओर कोराह और उसके अनुयायी हैं, और दूसरी ओर दातान और अबीराम हैं। आयत 1 में ओन नामक व्यक्ति का भी ज़िक्र है।

यद्यपि कोरह के अलावा अन्य पुरुष सम्मिलित थे, कथानक में कोरह के प्रमुख होने के कारण उसे बलवे का कारण समझा जाता है। उसका नाम अध्याय में दस बार पाया जाता है और बलवा करने वालों की सूची में पहले है (16:1)। मूसा ने "कोरह और उसकी सारी मण्डली" (16:5) से बात करके समूह की शिकायत का उत्तर दिया, और यह कोरह था जिसने मूसा और हारून (16:19) के विरोध में मण्डली को इकट्ठा किया। बलवे को "कोरह और उसकी मण्डली" (16:40) का काम माना जाता है, और बलवा करने वालों में मारे गए लोगों को "कोरह के संग भागी होकर मर गए थे" कहा जाता है (16:49; देखें 16:6, 8, 16, 24, 27)।[1] बाद के वर्षों में, इस अध्याय को कोरह के बलवे के रूप में स्मरण किया गया था (देखें 27:3)।

बलवे को तेजी से बदलते दृश्यों की एक श्रृंखला में वर्णन किया गया है। विरोधियों ने, पहले एक साथ, और फिर अलग से, मूसा और हारून का सामना किया।

दृश्य 1: आरोप लगाना (16:1-4)

[1]कोरह जो लेवी का परपोता, कहात का पोता, और यिसहार का पुत्र था, वह एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम, और पेलेत के पुत्र ओन, [2]इन तीनों रूबेनियों से मिलकर मण्डली के ढाई सौ प्रधान, जो सभासद और नामी थे, उनको संग लिया; [3]और वे मूसा और हारून के विरुद्ध उठ खड़े हुए, और उनसे कहने लगे, "तुम ने

बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक-एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिये तुम यहोवा की मण्डली में ऊँचे पद वाले क्यों बन बैठे हो?" [4]यह सुनकर मूसा अपने मुँह के बल गिरा।

आयतें 1, 2. इन दो आयतों ने बलवे के ब्यौरे के लिए मंच तैयार किया। प्रधानों का **रूबेन** के वंशज एक लेवीय **कोरह**, **दातान**, **अबीराम** और **ओन** के रूप में परिचय दिया गया है। कहाती, वह कुल जिससे कोरह सम्बन्धित था, और रूबेनी दोनों ने तम्बू के दक्षिण में छावनी डाली थी (2:10; 3:29); एक दूसरे के साथ उनकी निकटता इस्राएल के अगुवों के विरुद्ध षड्यंत्र की व्याख्या करने में सहायता कर सकती है।

स्पष्ट है उनके साथ मूसा के विरूद्ध, सभी गोत्रों से 250 अन्य असंतुष्ट लोग इकट्ठे हुए, जिनका **मण्डली के प्रधानों** के रूप में परिचय दिया गया है, जो **सभासद थे और नामी थे**। भाषा संकेत करती है कि 250 पुरुष इस्राएल के सभी गोत्रों में से थे। बाद में (16:8-11) में, मूसा ने इस समूह को "कोरह" और "लेवी के पुत्रों" के रूप में संबोधित किया है। शायद इन आयतों के प्रमाणों को यह मानकर सुलझाया जा सकता है कि ये 250 लोग सभी गोत्रों में से थे, परन्तु लेवियों ने इस समूह पर प्रभुत्व रखा। शायद कोरह और उसके साथी लेवियों ने अन्य गोत्रों के प्रधानों को मनाने का प्रयास किया कि उनके पास भी याजकीय पद तक पहुंच होनी चाहिए।

कोरह की पृष्ठभूमि की एक जाँच कथानक को तीव्र ध्यान के केंद्र में लाती है। **कोरह लेवी का परपोता, कहात का पोता, और यिसहार का पुत्र था**। मूसा और हारून भी कहात के वंश से आए, और ऐसा प्रतीत होता है कि उनका पिता अम्राम कोरह के पिता यिसहार का भाई (निर्गमन 6:18; 1 इतिहास 6:2) था। इस मामले में, कोरह हारून और मूसा का चचेरे भाई रहा होगा। सम्भवतः जब वे एक ही परिवार से आए थे, तो कोरह यह नहीं सोचता था कि मूसा और हारून उसके अपने पद से अधिक बड़े पदों के योग्य थे।

आयत 3. कोरह और उसके पीछे चलने वालों की शिकायत यह थी कि, चूंकि **सारी मण्डली पवित्र थी**, इसलिए मूसा और हारून को **यहोवा की मण्डली** में **ऊँचे पद** पर रहने का कोई अधिकार नहीं था। प्रधानों ने कहा, "तुम ने बहुत किया!" (NIV; NLT)। वे यह कहने में उचित थे कि मण्डली पवित्र थी (निर्गमन 19:6; गिनती 15:39, 40), परन्तु मूसा और हारून के नेतृत्व का विरोध करने में गलत थे। इन दो पुरुषों ने स्वयं को ऊँचा नहीं किया था; बल्कि, परमेश्वर ने उन्हें ऊँचा किया था (निर्गमन 3; 4; 28; 29)। यह विचार कि इस्राएल एक "पवित्र देश" था और **यहोवा उनके मध्य** था, इसका अर्थ यह नहीं था कि लोगों को उन प्रधानों की आवश्यकता नहीं थी जिनके कर्तव्यों में आत्मिक मार्गदर्शन भी सम्मिलित होगा। मूसा और हारून की परमेश्वर द्वारा नियुक्ति ने इस प्रश्न का उत्तर दिया होगा कि इस्राएल के परमेश्वर द्वारा ठहराए गए अगुवे कौन थे।

सभी सम्भावनाओं में, इस शिकायत ने उनके असली उद्देश्यों को मुखौटा पहना दिया था। स्पष्ट है, कोरह का लक्ष्य अपने और अन्य लेवियों के लिए याजक (16:9,

10) के रूप में सेवा करने का अधिकार प्राप्त करना था - और सम्भवतः दूसरों के लिए भी उस क्षमता में सेवा करना था। शायद, षड्यंत्र में सम्मिलित रूबेनियों ने इस्राएल का अगुवाई करने का अधिकार मांगा था जैसा कि मूसा किया करता था। उन्होंने स्वयं को प्रमुख गोत्र के सदस्य के रूप में देखा होगा - सब के बाद, रूबेन याकूब का सबसे बड़ा पुत्र था - और सोचा कि उन्हें परमेश्वर के लोगों के प्रधान होना चाहिए। कोई यह कह सकता है कि रूबेनी इस्राएल की सांसारिक अगुवाई की खोज में थे; उन्हें मूसा को बदलना पसंद आया होगा। दूसरी तरफ, कोरह और लेवीय आत्मिक अगुवाई की खोज में थे; वे हारून का स्थान लेना चाहते थे। मनुष्य की प्रकृति को देखते हुए, यह असम्भव है कि बलवा करने वालों में से कोई भी इस्राएल को एक अगुवाहीन जाति या लोकतंत्र में बनाने की सोच रहा था। इसके बजाय, वे मूसा और हारून के अधिकार को कमजोर करने और हड़पने के लिए मण्डली की पवित्रता की दुहाई दे रहे थे। वे इस्राएल के अगुवे बनना चाहते थे!

आयत 4. जब मूसा ने यह सुना तो, उसने भूमि पर **मुँह के बल गिरकर** उत्तर दिया। स्पष्ट तौर पर, इसने इन बलवा करने वालों के द्वारा लिए गए कदमों और उसके भयानक परिणाम के प्रति अपनी अस्वीकृति का प्रदर्शन किया था। (देखें 16:22, 45 अध्याय में ऐसे अवसरों के लिए जब मूसा और हारून अपने मुँह के बल गिरे थे।)

दृश्य 2: मूसा की चुनौती (16:5-11)

5फिर उसने कोरह और उसकी सारी मण्डली से कहा, "सबेरे यहोवा दिखला देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपने समीप बुला भी लेगा। 6इसलिये, हे कोरह, तुम अपनी सारी मण्डली समेत यह करो, अर्थात् अपना-अपना धूपदान ठीक करो; 7और कल उनमें आग रखकर यहोवा के सामने धूप देना, तब जिसको यहोवा चुन ले वही पवित्र ठहरेगा। हे लेवियो, तुम भी बड़ी बड़ी बातें करते हो, अब बस करो।" 8फिर मूसा ने कोरह से कहा, "हे लेवियों, सुनो, 9क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है कि इस्राएल के परमेश्वर ने तुम को इस्राएल की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवा करने, और मण्डली के सामने खड़े होकर उसकी भी सेवा टहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है; 10और तुझे और तेरे सब लेवी भाइयों को भी अपने समीप बुला लिया है? फिर भी तुम याजक पद के भी खोजी हो? 11और इसी कारण तू ने अपनी सारी मण्डली को यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी किया है; हारून कौन है कि तुम उस पर बुड़बुड़ाते हो?"

आयतें 5-7. जब मूसा ने **कोरह और उसकी सारी मण्डली से बात की**, दातान और अबीराम दृश्य से ओझल हो चुके थे, और वे केवल आयत 12 में फिर से दिखाई पड़ते हैं। सम्भवतः आरम्भिक टकराव के बाद (16:1-4), दातान और अबीराम ने मण्डली को उनके पीछे चलने वालों सहित मूसा के लिए उनका अपमान दिखाने

के लिए छोड़ दिया था। उनके प्रस्थान के बाद, मूसा ने कोरह की मण्डली से बात की।

कोरह के तर्क के उत्तर में, मूसा ने उसे और उसके साथ के लोगों को एक मुकाबले की चुनौती दी। अगले दिन उन्हें **अपना-अपना धूपदान** लेना था **उनमें आग रखकर** उन पर **धूप डालना था**। ये धूपदान लंबे हत्थे सहित के साथ छिछले बरतन थे। बरतनों में गर्म कोयले रखे गए थे, और एक सुखदायक सुगन्ध देने के लिए कोयलों पर धूप छिड़क दी गई थी। धूप चढ़ाने के बाद, लेवीय और हारून परमेश्वर के यह दिखाने के लिए प्रतीक्षा करेंगे कि **कौन पवित्र** था, यानी, कौन परमेश्वर को समर्पित था और वास्तव में उसे ही उसको धूप चढ़ाने का अधिकार प्राप्त था।

इस चुनौती के बाद, मूसा ने चिताया कि, "हे लेवियो, तुम भी बड़ी-बड़ी बातें करते हो, अब बस करो!" (NLT)। उसके शब्द आयत 3 में मण्डली की शिकायत का प्रतिबिम्ब थे: "तुम ने बहुत किया!" (NLT)। वास्तव में, ये लेवीय ही थे जो अपने अधिकार की सीमा लांघ चुके थे।

आयतें 8-11. मूसा ने **कोरह** और **लेवी के पुत्रों** को यह कहकर डांट लगाई, और कहा कि, वास्तव में, क्योंकि परमेश्वर ने तुम को **इस्राएल की मण्डली** से **अलग करके अपने निवास की सेवा करने**, और मण्डली के सामने खड़े होकर उसकी भी सेवा टहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है; और उन्हें **याजक पद के भी खोजी** होने की बजाय अपनी भूमिका से तृप्त होना चाहिए। परमेश्वर ने हारून के परिवार को याजक बनने के लिए नियुक्त किया था; याजक पद को हड़पने का प्रयास करने के द्वारा ये बलवा करने वाले वास्तव में **यहोवा के विरुद्ध इकट्ठे हुए थे**। अन्य शब्दों में, परमेश्वर के अगुवों का तिरस्कार करना स्वयं परमेश्वर का तिरस्कार करना है! मूसा ने कोरह से अपनी दुहाई को इन शब्दों के साथ समाप्त किया: **"हारून कौन है कि तुम उस पर बुड़बुड़ाते हो?"** सम्भवतः उसका तात्पर्य था कि हारून स्वयं महत्वपूर्ण नहीं था, और केवल वह मामला जो महत्वपूर्ण था वह यह था कि जो बलवा करने वाले लोग हारून के याजकीय पद का विरोध कर रहे थे वे परमेश्वर की इच्छा का तिरस्कार कर रहे थे।

दृश्य 3: बुलावा (16:12-15)

[12]फिर मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम को बुलवा भेजा; और उन्होंने कहा, "हम तेरे पास नहीं आएँगे। [13]क्या यह एक छोटी बात है कि तू हम को ऐसे देश से जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं इसलिये निकाल लाया है, कि हमें जंगल में मार डाले, फिर क्या तू हमारे ऊपर प्रधान भी बनकर अधिकार जताता है? [14]फिर तू ने हमें ऐसे देश में जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं नहीं पहुँचाया, और न हमें खेतों और दाख की बारियों के अधिकारी किया। क्या तू इन लोगों की आँखों में धूल डालेगा? हम तो नहीं आएँगे।" [15]तब मूसा का कोप बहुत भड़क उठा, और उसने यहोवा से कहा, "उन लोगों की भेंट की ओर दृष्टि न

कर। मैं ने तो उनसे एक गदहा नहीं लिया, और न उनमें से किसी की हानि की है।"

इसके बाद कथानक बलवा करने वालों के दूसरे समूह की ओर मुड़ता है: दातान और अबीराम। इस बिंदु पर, ब्यौरे से ओन गायब हो गया है। वचन में कोई संकेत नहीं है कि कितना समय बीत चुका है, परन्तु जो भी कहा गया है, वह आयत 12 से 15 में दर्ज घटना को कोरह को 5 से 11 आयतों तक मूसा की चुनौती के बाद दर्ज घटना से अलग नहीं करेगा। सम्भवतः, मूसा के कोरह और उसकी मण्डली का सामना करने के बाद, वे अगले दिन या बस कुछ घंटों के बाद, मुकाबले के लिए तैयार होने के लिए निकल गए।

आयत 12. फिर मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम को बुलवा भेजा। उनका अपराध गंभीर था और उन्हें अपने कार्यों के प्रति उत्तर देने के लिए मूसा के पास आने को कहा गया था। दातान और अबीराम ने मूसा के बुलावे का तिरस्कार यह कहकर किया, **"हम तेरे पास नहीं आएँगे।"**

आयतें 13, 14. परमेश्वर के प्रवक्ता की आज्ञा का पालन करने की बजाय, उन्होंने उस पर उन्हें **ऐसे देश में जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं** उसमें पहुँचाने **और खेतों और दाख की बारियों के अधिकारी बनाने** में विफल रहने के लिए आरोप लगाया। इसके बजाय उन्होंने कहा कि मूसा **उन्हें ऐसे देश से जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं इसलिये निकाल लाया है, कि हमें जंगल में मार डाले**। दातान और अबीराम ने आम तौर पर कनान ("दूध और मधु की धाराओं वाली देश") के लिए आरक्षित उदार भाषा ली और मिस्र का वर्णन करने के लिए इसका प्रयोग किया। चूंकि इस्राएली वहाँ दास रहे थे, इसलिए उन्हें स्पष्ट रूप से स्मरण था मिस्र में जीवन वास्तव में इससे बेहतर था (11:5 पर टिप्पणियां देखें)। ये लोग वास्तव में "जंगल में मर जाएंगे," परन्तु यह मूसा की गलती नहीं होगी। उनकी मृत्यु उनके बलवे के कारण ईश्वरीय निर्णय के रूप में आएगी (16:25-34)।

दातान और अबीराम ने मूसा के अधिकार का भी तिरस्कार किया और दावा किया वह **उनके ऊपर प्रधान** बनना चाहता था। क्रिया שָׂרַר *(सरार)* का अनुवाद "प्रधान के रूप में कार्य करना" में भी किया जा सकता है (देखें; KJV; REB; ESV)। NLT में "तू अब हमसे अपनी प्रजा के समान व्यवहार करता है।"

यह पूछने के बाद, **"क्या तू इन लोगों की आँखों में धूल डालेगा?"** उन्होंने मूसा की विनती को फिर से यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि, **"हम तेरे पास नहीं आएँगे!"** इस प्रश्न से बलवा करने वालों का क्या तात्पर्य था? एक सम्भावना यह है कि वे उसके ऊपर उन्हें हानि पहुँचाने का आरोप लगा रहे थे। एक शत्रु की आँखें फोड़ देना प्राचीन निकट पूर्व में एक आम अभ्यास था (न्यायियों 16:21; 2 राजा 25:7)।

आयत 15. मूसा ने उनके अपमानजनक उत्तर का बहुत क्रोधित होकर और परमेश्वर से **उनकी भेंटो को ग्रहण न करने की** प्रार्थना करने के द्वारा उत्तर दिया। रॉय गेन ने इसका अवलोकन इस प्रकार किया कि "यह एकमात्र ऐसा स्थान है जहां पेंटाटूक कहता हैं कि मूसा '*अत्यन्त* क्रोधित' था।"[2] मूसा परमेश्वर से बलवा

करने वालों की भेंट स्वीकार न करने या इसे कृपा दृष्टि से न देखने के लिए कह रहा था। उसने प्रार्थना की, **"उन लोगों की भेंट की ओर दृष्टि न कर। मैं ने तो उनसे एक गदहा नहीं लिया, और न उनमें से किसी की हानि की है।"** यह कथन सम्भवतः विरोध करने की मंशा से था कि वह इस मामले में किसी भी बुरे काम से निर्दोष था (देखें 1 शमूएल 12:3); उसने दुर्व्यवहार द्वारा बलवे को नहीं उकसाया था।

दृश्य 4: प्रदर्शन (16:16-22)

[16]तब मूसा ने कोरह से कहा, "कल तू अपनी सारी मण्डली को साथ लेकर हारून के साथ यहोवा के सामने हाज़िर होना; [17]और तुम सब अपना-अपना धूपदान लेकर उनमें धूप देना, फिर अपना-अपना धूपदान जो सब समेत ढाई सौ होंगे यहोवा के सामने ले जाना; विशेष करके तू और हारून अपना-अपना धूपदान ले जाना।" [18]इसलिये उन्होंने अपना-अपना धूपदान लेकर और उनमें आग रखकर उन पर धूप डाला; और मूसा और हारून के साथ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े हुए। [19]और कोरह ने सारी मण्डली को उनके विरुद्ध मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा कर लिया। तब यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया। [20]तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [21]"उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।" [22]तब वे मुँह के बल गिरके कहने लगे, "हे ईश्वर, हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर, क्या एक पुरुष के पाप के कारण तेरा क्रोध सारी मण्डली पर होगा?"

आयतें 16-18. इसके बाद दृश्य **कोरह** और उसकी मण्डली पर वापस आता है। फिर मूसा ने उन्हें निर्देश दिया कि वे अगले दिन क्या करें। न केवल 250 प्रधानों में से प्रत्येक को आग या कोयलों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले **धूपदान** को तैयार करना था, बल्कि कोरह और **हारून** भी अपने धूपदान मुकाबले में लाए थे।

शब्द कहता है, **इसलिये उन्होंने अपना-अपना धूपदान लिया** क्योंकि जो मुकाबला मूसा ने रखा था वह "अगले दिन" होने वाला था, हम कल्पना कर सकते हैं कि आयत 18 से 22 उन घटनाओं का वर्णन करती हैं जो वास्तविक टकराव के एक दिन बाद घटित हुए थे।

विद्रोहियों ने मूसा के कहने के अनुसार किया। प्रत्येक ने **अपना-अपना धूपदान** या आगदान लिया, उस पर **आग** [जलते हुए कोयले] **रखकर**, और फिर **मिलापवाले तम्बू के द्वार** के सामने **मूसा और हारून** के साथ खड़े होकर उस **पर धूप डाला**।

आयत 19. कोरह ने सारी मण्डली को मूसा और हारून विरुद्ध इकट्ठा किया, सम्भवतः मुकाबले में उनके साथ अपनी बराबरी प्रदर्शित करने की योजना बना रहा था। **मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा**, परमेश्वर ने अपना उपस्थिति का परिचय दिया। हम पढ़ते हैं कि **यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया**। जैसा कि पहले हुआ था (12:5; 14:10), परमेश्वर ने स्वयं कार्यवाही में हस्तक्षेप

किया।

आयतें 20-22. परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा, **"उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।"** जो लोग "बीस वर्ष और उससे अधिक" थे, उन्हें पहले से ही प्रतिज्ञा के देश (14:29, 30) को वारिस हुए बिना जंगल में मरने का दण्ड दिया जा चुका था। हालाँकि, इस बिंदु पर, परमेश्वर के मन में उन्हें तुरंत नाश करना था।

इस्राएल के दो अगुवों ने काफी महानता दिखाई (आखिरकार, उनका तिरस्कार किया जा रहा था), **तब वे मुँह के बल गिरे** (16:4, 45) और परमेश्वर के सामने थोड़े लोगों के पाप के कारण समस्त मण्डली को नष्ट न करने की विनती करने लगे। उन्होंने कहा, **"हे ईश्वर, हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर, क्या एक पुरुष के पाप के कारण तेरा क्रोध सारी मण्डली पर होगा?"** वे तर्क दे रहे थे कि कुछ लोगों के पापों के कारण सभी को नष्ट करना उचित नहीं होगा।[3] एक सम्पूर्ण देश की तुलना में, बलवा करने वाले "थोड़े" थे। परमेश्वर ने उनकी विनती स्वीकार की और उसने अपने क्रोध को मण्डली पर से बलवा करने वाले प्रधानों की ओर कर दिया।

दृश्य 5: न्याय (16:23-34)

[23]यहोवा ने मूसा से कहा, [24]"मण्डली के लोगों से कह कि कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आसपास से हट जाओ।" [25]तब मूसा उठकर दातान और अबीराम के पास गया; और इस्राएलियों के वृद्ध लोग उसके पीछे-पीछे गए। [26]और उस ने मण्डली के लोगों से कहा, "तुम उन दुष्ट मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ, और उनकी कोई वस्तु न छूओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब पापों में फँसकर मिट जाओ।" [27]यह सुन के वे कोरह, दातान और अबीराम के तम्बुओं के आसपास से हट गए; परन्तु दातान और अबीराम निकलकर अपनी पत्नियों, बेटों, और बाल-बच्चों समेत अपने-अपने डेरे के द्वार पर खड़े हुए। [28]तब मूसा ने कहा, "इस से तुम जान लोगे की यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैं ने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया। [29]यदि उन मनुष्यों की मृत्यु और सब मनुष्यों के समान हो,और उनका दण्ड सब मनुष्यों के समान हो, तब जानो कि मैं यहोवा का भेजा हुआ नहीं हूँ। [30]परन्तु यदि यहोवा अपनी अनोखी शक्ति प्रकट करे, पृथ्वी अपना मुँह पसारकर उनको, और उनका सब कुछ निगल जाए, और वे जीते जी अधोलोक में जा पड़ें, तो तुम समझ लो कि इन मनुष्यों ने यहोवा का अपमान किया है।" [31]वह ये सब बातें कह ही चुका था कि भूमि उन लोगों के पाँव के नीचे फट गई; [32]और पृथ्वी ने अपना मुँह खोल दिया और उनका, और उनके घर द्वार का सामान, और कोरह के सब मनुष्यों और उनकी सारी सम्पत्ति को भी निगल लिया। [33]और वे और उनका सारा घरबार जीवित ही अधोलोक में जा पड़े; और पृथ्वी ने उनको ढाँप लिया, और वे मण्डली के बीच में से नष्ट हो गए। [34]और जितने इस्राएली उनके चारों ओर थे वे उनका चिल्लाना सुन यह कहते हुए भागे कि कहीं

पृथ्वी हम को भी निगल न ले!

दृश्य फिर से मिलाप के तम्बू से बलवा करने वाले प्रधानों के तम्बू की ओर मुड़ जाता है। विषय, हालाँकि, वही बना रहता है: परमेश्वर उन लोगों को नष्ट कर देगा जो उसके नियुक्त अगुवों को चुनौती देते हैं।

आयतें 23-30. यहोवा ने मूसा से कहा कि **मण्डली के लोगों से कहे** कि **कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आसपास से हट जाओ।** तब मूसा उठकर दातान और अबीराम के पास गया; और इस्राएलियों के वृद्ध लोग उसके पीछे-पीछे गए। और उस ने मण्डली के लोगों से कहा, **तुम उन दुष्ट मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ, और उनकी कोई वस्तु न छूओ**, कहीं ऐसा न हो कि **तुम भी उनके सब पापों में** फँसकर **मिट जाओ**। लोगों ने उसकी आज्ञा का पालन किया।

बलवा करने वाले विद्रोह पूर्वक **निकलकर अपनी पत्नियों, बेटों, और बाल-बच्चों समेत अपने-अपने डेरे के द्वार पर खड़े हुए**। तब उन्हें यह बताते हुए मूसा ने उनसे कहा कि इन लोगों के साथ क्या होने वाला था। इस से तुम **जान लोगे** की यहोवा ने मुझे भेजा है कि **यह सब काम करूँ**। उसने कहा यदि उनकी मृत्यु **अलग प्रकार से** हो - **पृथ्वी अपना मुँह पसारकर उनको, और उनका सब कुछ निगल जाए**, और **वे जीते जी अधोलोक में जा पड़ें** - तो तुम समझ लो कि **इन मनुष्यों ने यहोवा का अपमान किया है**। मूसा ने कहा यदि उनका **दण्ड सब मनुष्यों के समान हो** (वे बाद में एक प्राकृतिक मृत्यु मरें), तब जानो कि वह मुझ **यहोवा का भेजा हुआ नहीं** है।

आयतें 31-33. मूसा ने जैसा कहा था ठीक वही हुआ, **वह ये सब बातें कह ही चुका था** कि उन लोगों के देखते-देखते **भूमि** उन लोगों के पाँव के नीचे **फट गई; और पृथ्वी ने अपना मुँह खोल दिया और उनका, और उनके घर द्वार का सामान**, और उनकी सारी सम्पत्ति को भी **निगल लिया**। यह असाधारण अन्त **कोरह के सब मनुष्यों पर आ पड़ा** वे और **उनका सारा घरबार जीवित ही अधोलोक** या "कब्र" (NIV; NLT) **में जा पड़े**; और पृथ्वी ने उनको ढाँप लिया। इस प्रकार से परमेश्वर ने बलवे की अगुवाई करने वाले तीन प्रधानों में से दो को नष्ट कर दिया, और **वे मण्डली के बीच में से नष्ट हो गए**।

आयत 34. सभी इस्राएली जिन्होंने यह भयंकर दृश्य देखा जैसे कि पृथ्वी ने विद्रोहियों को निगल लिया था, वे भयभीत हो गए कि वे भी नष्ट हो जाएंगे। वे **यह कहते हुए भागे कि कहीं पृथ्वी हम को भी निगल न ले!** सम्भवतः, परमेश्वर की मंशा विद्रोहियों की मृत्यु से इस्राएलियों के बीच भय उत्पन्न करना था। गिनती 26:10 कहती है कि इन 250 पुरुषों की मृत्यु इस्राएल के लिए एक "दृष्टान्त" ठहरी। सम्भवतः, दातान और अबीराम (26:9, 10 में इसके विषय में भी बात की गई है) की मृत्यु का भी यही उद्देश्य था।

यद्यपि दातान, अबीराम, और उनके परिवार इस विनाश में मारे गए, अगली आयत में वर्णन किया गया है कि कोरह 250 पुरुषों के संग मारा गया था। कोरह के पास एक धूपदान था (16:17), 26:10 संकेत करता है कि कोरह इन पुरुषों के

संग मारा गया था। यह वाक्यांश कहता है कि "कोरह की मण्डली के सभी लोग" नाश हो गए, परन्तु 26:11 इसमें जोड़ता है कि "परन्तु कोरह के पुत्र नहीं मरे थे" (26:8-11) पर टिप्पणियाँ देखें)।

दृश्य 6: अनुस्मारक (16:35-40)

[35]तब यहोवा के पास से आग निकली, और उन ढाई सौ धूप चढ़ाने वालों को भस्म कर डाला। [36]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [37]"हारून याजक के पुत्र एलीआज़ार से कह कि उन धूपदानों को आग में से उठा ले; और आग के अंगारों को उधर ही छितरा दे, क्योंकि वे पवित्र हैं। [38]जिन्होंने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि की है, उनके धूपदानों के पत्तर पीट पीटकर बनाए जाएँ जिससे कि वह वेदी के मढ़ने के काम आए; क्योंकि उन्होंने यहोवा के सामने रखा था; इससे वे पवित्र हैं। इस प्रकार वह इस्राएलियों के लिये एक निशान ठहरेगा।" [39]इसलिये एलीआज़ार याजक ने उन पीतल के धूपदानों को, जिनमें उन जले हुए मनुष्यों ने धूप चढ़ाया था, लेकर उनके पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने के लिये बनवा दिए, [40]कि इस्राएलियों को इस बात का स्मरण रहे कि कोई दूसरा, जो हारून के वंश का न हो, यहोवा के सामने धूप चढ़ाने को समीप न जाए, ऐसा न हो कि वह भी कोरह और उसकी मण्डली के समान नष्ट हो जाए, जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उसको आज्ञा दी थी।

आयत 35. होने वाले याजकों ने मिलाप वाले तम्बू के सामने अपने-अपने धूपदानों में धूप डाल ली थी (16:18)। कोरह के साथ 250 लोगों को कोई संदेह नहीं था कि उनकी भेंट परमेश्वर के द्वारा ग्रहण की जाने वाली थी। इसके बजाय, **यहोवा के पास से आग निकली, और उन ढाई सौ धूप चढ़ाने वालों को भस्म कर डाला**। इसने याजक पद की आकांक्षा का अन्त कर डाला!

आयतें 36-38. यद्यपि अंग्रेजी संस्करणों में अध्याय 16 में 36 से 50 आयतों को सम्मिलित किया गया है, मेसोरेटिक टेक्स्ट में इन पंद्रह आयतों को अध्याय 17 के पहले भाग के रूप में सम्मिलित किया गया है। यह भाग कोरह के बलवे का दुखद वर्णन कोरह और उसकी मण्डली के विनाश के विषय में बताते हुए समाप्त करता है।

अग्निपरीक्षा के बाद, परमेश्वर ने मूसा को हारून के पुत्रों में से एक **एलीआज़ार** - जो याजक रूप में सेवा करता था (3:4; 4:16; 19:3, 4) कहने को कहा कि - वह **आग के द्वारा** मारे जाने वाले लोगों द्वारा उपयोग किए **धूपदानों को उठा ले**। मूसा को **जलते हुए कोयलों को छितराने के लिए कहा गया था**। हारून इन कर्तव्यों को नहीं कर सका क्योंकि महायाजक के रूप में, उसे मृतकों के संपर्क से अशुद्ध नहीं होना था। 16:48 में उसका "मृतकों और जीवित के बीच" खड़ा होना एक असाधारण स्थिति प्रतीत होती है।

धूपदानों को **पवित्र** समझा जाना था, या परमेश्वर को समर्पित समझा जाना

था, क्योंकि उन्हें **यहोवा के सामने रखा** गया था। एलीआज़ार को उन्हें **पीट-पीटकर उन्हें वेदी के मढ़ने के** लिए बनाना था - जो यह है कि, होमबलि की वेदी, जो निवास के सामने खड़ी थी। यह सम्भवतः दूसरा आवरण था जो वेदी की रचना और इसे पीतल से मढ़े जाने के बाद चढ़ाया गया था (निर्गमन 27:2; 38:2)। इस आवरण का काम **इस्राएलियों के लिए निशान** का काम करना था।

आयतें 39, 40. परमेश्वर के निर्देश के अनुपालन में, **एलीआज़ार याजक ने उन पीतल के धूपदानों को** इकट्ठा किया, और उन्होंने **उनके पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने के लिये बनवा दिए**। यह पीतल का आवरण **इस्राएल** के लिए एक अनुस्मारक होगा जो उसे कोरह और उसकी मण्डली ने जो पाप किए उनका दोषी होने से रोकेगा: **इस्राएलियों को इस बात का स्मरण रहे कि कोई दूसरा, जो हारून के वंश का न हो, यहोवा के सामने धूप चढ़ाने को समीप न जाए।** तब से, हर बार जब एक इस्राएली वेदी पर भेंट लेकर आयेगा, तो उसे याजकों की भूमिका को हड़पने का जोखिम स्मरण दिलाया जाएगा जो विशेष रूप से हारून और उसके पुत्रों का अधिकार था।

दृश्य 7: परिणाम (16:41-50)

41दूसरे दिन इस्राएलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगी कि यहोवा की प्रजा को तुम ने मार डाला है। 42और जब मण्डली के लोग मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हो रहे थे, तब उन्होंने मिलापवाले तम्बू की ओर दृष्टि की; और देखा कि बादल ने उसे छा लिया है, और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है। 43तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के सामने आए, 44तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 45"तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से हट जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।" तब वे मुँह के बल गिरे। 46और मूसा ने हारून से कहा, "धूपदान को लेकर उसमें वेदी पर से आग रखकर उस पर धूप डाल, मण्डली के पास फुर्ती से जाकर उसके लिए प्रायश्चित्त कर; क्योंकि यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का है, और मरी फैलने लगी है।" 47मूसा की आज्ञा के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा गया; और यह देखकर कि लोगों में मरी फैलने लगी है, उसने धूप जलाकर लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया। 48और वह मुर्दों और जीवित के मध्य में खड़ा हुआ; तब मरी थम गई। 49और जो कोरह के संग भागी होकर मर गए थे, उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गए वे चौदह हज़ार सात सौ थे। 50तब हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया, और मरी थम गई।

आयत 41. बलवा करने वालों की ईश्वरीय रूप से प्रभावित मृत्यु को लोगों को मूसा और हारून के नेतृत्व को स्वीकार करने के लिए आश्वस्त करना चाहिए था। इसे उनके मन में परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए गए अगुवों के प्रति एक विनम्र भावना पैदा करनी चाहिए थी। आश्चर्यजनक रूप से, ऐसा नहीं था। कथानक

प्रधानों के बलवे से लोगों के बलवे में बदल जाती हैं।

दूसरे दिन इस्राएलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगी कि यहोवा की प्रजा को तुम ने मार डाला है। निस्संदेह, वे इस सत्य के प्रति अंधे हो चुके थे कि इन मृत्यु का कारण मूसा और हारून नहीं थे। विद्रोह करने वाले परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करने के कारण अपनी मृत्यु के दोषी स्वयं थे। वे ही लोग जिन्होंने परमेश्वर का कादेश में तिरस्कार किया था, जब उसने उन्हें प्रतिज्ञा के देश को ले लेने की आज्ञा दी थी, वे फिर से उसका तिरस्कार कर रहे थे। लोग सदैव अनुभव से नहीं सीखते।

आयत 42. स्पष्ट तौर पर, इस्राएलियों ने मूसा और हारून के विरुद्ध अपनी शिकायत दर्ज कराने के लिए एक सभा बुलाई। जब एक बार, **मण्डली इकट्ठी हो गई**, परमेश्वर ने **मिलापवाले तम्बू** को **बादल से** ढकने के द्वारा उत्तर दिया (देखें 16:19)।

आयतें 43-45. जब "यहोवा का तेज प्रकट हुआ" और **मूसा और हारून** पहुँचे, परमेश्वर ने उनसे बात की, और समस्त मण्डली को नष्ट करने की चेतावनी दी। उसने कहा, **"तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से हट जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ"** (देखें 16:21)। ये सुनकर, वे अपने **मुँह के बल गिरे** (देखें 16:4, 22)।

आयत 46. इस बार, **मूसा** ने **हारून** से कहा, **धूपदान को लेकर उसमें वेदी पर से आग रखकर उस पर धूप डाल**, ताकि वह उसका प्रयोग लोगों के लिए **प्रायश्चित्त करने** हेतु कर सके; यह धूपदान वही रहा होगा जो हारून प्रायश्चित के दिन परमपवित्र स्थान में ले गया था (लैव्य. 16:12, 13; देखें निर्गमन 27:3)। यहोवा ने अपने **क्रोध** में, पहले ही **मण्डली को मरी से** नाश करना आरम्भ कर दिया था।

आयतें 47-50. मूसा की आज्ञा के अनुसार **हारून** धूपदान लेकर **मण्डली के बीच में** दौड़ा गया ताकि वह **लोगों के लिए प्रायश्चित कर सके।** वह **मुर्दों और जीवित के मध्य में खड़ा हुआ; तब मरी थम गई।** फिर भी मरी के द्वारा 14,700 लोग **मारे गए**। प्रायश्चित करने के बाद, **हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया।**

इस घटना के सम्बन्ध में मूसा और हारून दोनों अपने व्यवहार के लिए श्रेय के योग्य हैं। उन्होंने उन लोगों के लिए हस्तक्षेप किया जिन्हें ईश्वर द्वारा उनके कामों के अनुसार दण्ड दिया जा रहा था क्योंकि उन्होंने मूसा और हारून की अगुवाई का तिरस्कार कर दिया था। वे उन लोगों की ओर से अच्छा कर रहे थे जिन्होंने उनकी बुराई की थी।

अनुप्रयोग

बलवे की प्रकृति (अध्याय 16)

कोरह की कहानी में, हम देखते हैं कि बलवा प्रकृति में प्रगतिशील है। भजनकार ने इस विचार को भजन संहिता 1 में प्रकट किया जैसे ही उसने बलवे

के कारण के भाग विचार के तीन चरणों का वर्णन किया था। तथ्यों को देखे बिना पहला चरण एक कारण में सम्मिलित हो रहा है। "क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता" (भजन 1:1)। जब कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करता या तथ्यों की जांच नहीं करता है और किसी मुद्दे के दोनों पक्षों की तुलना नहीं करता है, तो उसका क्षण के उत्साह में पकड़ा जाना आसान हो जाता है।

दूसरा चरण यह है जब कोई बलवे में सम्मिलित हो जाता है। "न पापियों के मार्ग में खड़ा होता है" (भजन 1:1) वे 250 बेनामी प्रधान कोरह के द्वारा मूसा और हारून के विरुद्ध शिकायत करने के लिए चालाकी से इस्तेमाल किए गए थे (16:3)। बलवा करने वाले अगुवे अपना भंडाफोड़ होने से बचाने के लिए गुमनामी में छिप जाते हैं।

तीसरा चरण यह है कि; यदि कोई एक बलवा करने वाले समूह में अधिक समय तक रहता है, तो वह उस समूह के सरदारों में से एक बन जाएगा। "और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है!" (भजन 1:1)। वह व्यक्ति जो घेरे के बाहर से आरम्भ करता है वह शीघ्र ही उसके उद्देश्य के विशेषज्ञों में से एक बन जाता है। यह शैली उन लोगों के बीच ध्यान देने योग्य है जो परमेश्वर की कलीसिया के प्रति अविश्वासी बन जाते हैं। निराशा या अवांछित होने के कारण वे बाहर निकले हुए हो सकते हैं। थोड़ी देर के लिए वे अज्ञात होने का प्रयास कर सकते हैं और यहाँ तक कि दोषी महसूस भी कर सकते हैं। समय बीतने के बाद, वे कड़वे और सनकी हो जाते हैं। जब कोई भेंट की जाती है, तो वे कलीसिया के साथ जो भी बुरा है वे उस सब के विशेषज्ञ बन जाते हैं। वे कलीसिया के आलोचक बन गए हैं।

कोरह का बलवा हमें राज्य की प्रकृति और इसमें हमारे स्थान का स्मरण दिलाता है। हमारे प्रभु के शिष्यों ने निर्णय किया कि वे प्रभुत्व के स्थानों को पाना चाहते थे, न कि सेवकाई के (मरकुस 9:33-35)। यीशु ने उन्हें बताया कि उनका राज्य सेवकाई के राज्यों से एक था और सांसारिक संगठनों की तरह नहीं था। संगठनात्मक शब्द "कलीसिया" का उपयोग करके हम शायद कलीसिया के राज्य की प्रकृति को भूल गए हैं। एक साम्राज्य में केवल एक राजा होता है। राज्य का राजा यीशु मसीह है। पतरस ने चेतावनी दी कि अगुवाई इस पर अधिकार जताने की ओर ले जा सकती ही "जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिये आदर्श बनो।" (1 पतरस 5:1-3)। जिस प्रकार एक राज्य को नेतृत्व की आवश्यकता होती है, उसे "अनुशासन" की भी आवश्यकता होती है। जब पौलुस ने के सेवक अगुवों (1 तीमु. 3:1) का वर्णन किया, तो उसने संकेत दिया कि यह एक "काम" था। हालाँकि, कार्य करने वाले अगुवों के काम के प्रभावी होने के लिए उनके शिष्य होने चाहिए।

कोरह का भाग एक सेवक का था, परन्तु उसे और अधिक चाहिए था। हमें भी एक सेवक का भाग दिया गया है। हमें जो परमेश्वर ने बनने और करने के लिए दिया है हम उसमें संतुष्ट हो सकते हैं, चाहे हम अगुवे हों या शिष्य?

इस्राएल तब तक एक पवित्र देश या उत्पादक लोग नहीं बन सका जब तक

उन्होंने के स्वयं कप परमेश्वर की अगुवाई के अधीन नहीं किया। उस अगुवाई के लिए उसकी योजना थी कि लोग मूसा और हारून की सुनें। आज परमेश्वर के इस्राएल के रूप में, हम तब तक पवित्र और उत्पादक नहीं हो सकते जब तक कि हम निरंतर स्वयं को यीशु और एक दूसरे के अधीन नहीं करते हैं (इफि. 5:21)। एक-दूसरे के अधीन होना और सेवक का हृदय होना हमारे परमेश्वर के अधीन होने के साथ आरम्भ होता है। हम स्वयं को किस ओर पाते हैं: क्या हम परमेश्वर की ओर खड़े हैं या किसी और की ओर? गलत ओर खड़ा होना महंगा है। कोरह इसके एक उदाहरण के रूप में कार्य करता है। GMT

क्या ओन पाप से फिर गया था (16:1)

ओन को अध्याय 16 के आरम्भ में षड्यंत्रकारियों में से एक के रूप में नामित किया गया है लेकिन उसका फिर से उल्लेख नहीं किया गया है। क्यों? कोई नहीं जानता। शब्द से गायब होने की सबसे उदार व्याख्या यह है कि, विद्रोहियों के साथ स्वयं को जोड़ने के बाद, उसने उनके उद्देश्य की मूर्खता देखी और वह उनके बलवे से दूर हो गया। यदि हाँ, तो बलवे के सम्बन्ध में उसके मन के बदलने का कारण क्या रहा? यदि ऐसा कुछ हुआ था, तो हो सकता है कि यह बाइबल में दूसरों को शैतान की सेवा को छोड़कर परमेश्वर की सेवा करने का यही कारण रहा होगा। हम शाऊल के मन परिवर्तन के विषय में सोच सकते हैं, जो पौलुस प्रेरित (प्रेरितों 9:1-22) बन गया था, या उस पुत्र के बदलाव के विषय में जिसने कहा, "मैं नहीं जाऊंगा," परन्तु बाद में पश्चाताप किया और अपने पिता की दाख की बारी में काम करने गया (मत्ती 21:28-31)। वही विचार आज पापियों को अंधेरे से परमेश्वर के अद्भुत प्रकाश में की ओर मोड़ सकता है।

पाप से ग्रसित लोगों की सहायता करना (16:46-48)

जब हारून ने मूसा के अनुरोध पर लोगों के लिए प्रायश्चित करने के लिए अपना धूपदान लिया, तो वह बोलने एक भाव से आज के मसीहियों के लिए एक उदाहरण स्थापित कर रहा था। मूसा के दिनों के समान ही, एक "मरी" हमारे आसपास के लोगों को प्रभावित करती है: पाप की पीड़ा न केवल शारीरिक रूप से लोगों को मार सकती है, बल्कि आत्माओं को अनन्तकाल तक दोषी भी ठहरा सकती है। मसीही लोगों को उस मरी से बचाने में सहायता कर सकते हैं। निस्संदेह, हम धूप की भेंट नहीं चढ़ाते हैं और न ही हारून के रूप में दूसरों के लिए प्रायश्चित करते हैं, परन्तु हम उन्हें प्रायश्चित्त के बारे में बता सकते हैं जो मसीह पहले से ही कर चुका है और उन्हें उद्धार का अवसर प्रदान करता है।

मसीही होने के नाते, हमें हारून के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि हम उन लोगों की ओर से हस्तक्षेप करने की खोज में हैं जो नाश हो गए हैं। 16:47 में हम तीन तरीकों को देखते हैं जिनसे हमें हारून के समान होना चाहिए:

1. दूसरों को बचाने के काम करने में तीव्र रहें। हारून अपने लोगों के बीच

"दौड़ा गया।"

2. साहसी और प्रेमी बनें। वह "मण्डली के बीच में से दौड़ा गया।" वह किस प्रकार सुनिश्चित हो सकता था कि वह स्वयं मरी द्वारा मार डाला नहीं जाएगा? उसने दूसरों को बचाने के अपने जीवन को में खतरे में डाल दिया।

3. उन लोगों के साथ सम्मिलित रहें जिन्हें आप बचाना चाहते हैं। हारून उन लोगों के बीच जाने को तैयार था जिन्हें वह बचाना चाहता। हम तब तक लोगों की सहायता नहीं कर सकते हैं जब तक कि हम उनके साथ सम्मिलित होने के इच्छुक नहीं हैं।

क्योंकि वह लोगों को मरी से बचाने के लिए परिश्रमी था, हारून "मृतकों और जीवित के बीच" खड़ा हुआ (16:48)। जब हम महान आज्ञा का पालन करने के लिए अपन पूरी प्रयास करते हैं, तो हम उनके पापों के कारण उनके पास आ रही लोगों की मृत्यु को भी रोक देते हैं। हम, हारून की तरह, मृतकों और जीवित के बीच खड़े हो सकते हैं! हम वे साधन हो सकते हैं जिनके द्वारा वे लोग जिन्हें मृत्यु के लिए दोषी ठहरा दिया गया है फिर से जीवन को खोज सकते हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]कोरह का नाम 16:10 में भी दिखाई देता है, जिसे NASB के अनुवादकों के द्वारा डाला गया है। [2]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004), 635. [3]यदि "एक व्यक्ति" को शाब्दिक तौर पर अनुवाद किया जाए, तो यह कोरह का सन्दर्भ होगा, जो बलवे का सरदार था।